रात्रि क्लास 12/1/69 :– बाप दादा समझते हैं जो भी बच्चे हैं जबकि यहाँ ही बैठे हैं। अपने माँ–बाप को ..... यहाँ आये हैं तो जरूर इस बाप को ही याद करते होंगे। घर तो छोड़ा, साथ में सारा परिवार भी छोड़ ..... आकर रहे हैं। खाना–पीना एक घर में, फिर याद दूसरे को करना यह तो ठगी हो गई। एक होती है अव्यभिचारी याद, दूसरी होती है व्यभिचारी याद। बहुतों को याद करना। एक को याद करना वह तो अव्यभिचारी याद। दूसरे याद पड़ते हैं तो वह व्यभिचारी याद है। भक्ति भी अव्यभिचारी है शिव की, फिर औरो को याद करना वह व्यभिचारी भक्ति हो जाती है। अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिला है एक बाप कितनी कमाल करते हैं। हमको विश्व (का) मालिक बनाते हैं। तो उस एक को ही याद करना चाहिए। मेरा तो एक। भक्ति मार्ग में भी याद करते हैं। अगर ..... की याद है तो अच्छा होगा। बाबा भी कहते हैं हमने पहले–2 शिवबाबा की भक्ति की है। अव्यभिचारी फिर व्यभिचारी तक आ गये हैं। अब बच्चे कहते हैं शिवबाबा कब याद नहीं रहते। वह भक्ति मार्ग में कहते थे हम एक ही की भक्ति करेंगे। वही पतित पावन है और तो कोई को पतित–पावन कहा नहीं जाता। .... को ही कहा जाता। वह भी ऊँच ते ऊँच। अभी तो भक्ति की बात ही नहीं। बच्चों को ज्ञान है। ज्ञान सागर .... याद करना है। भक्ति मार्ग में कहते थे आप आवेंगे तो आपको ही याद करेंगे। तो यह बातें याद करनी (चा)हिए। भक्ति मार्ग में ऐसे कहते थे। अभी बाप आये हैं तो एक के सिवाय कोई को याद नहीं करना चाहिए। विकारियों से तो देवताएँ अच्छे हैं। हरेक अपने से पूछे हम एक बाप को याद करते हैं या अनेक मित्र–संबंधियों को। एक बाप से ही दिल लगानी है। अगर और तरफ गई तो याद व्यभिचारी हो जाती है। गुरु गुसाई तो

खलास हुये। बाकी रहे मित्र–सम्बन्धी। बाप कहते हैं यह भी सभी खत्म हो जावेंगे। मामेकं याद करो फिर वहां तुमको दैवी संबन्धी मिलेंगे। नई दुनिया में सभी नये मिलेंगे। पुरानी भ्रष्टाचारी दुनिया नहीं रहेगी। तो अपनी जाँच रखनी है हम किसको याद करते हैं। अपने से पूछो बाप के बने हो या और कोई के। याद तो करना है एक को। बाप कहते हैं तुम मुझ पारलौकिक बाप को याद करो। वह पतित–पावन है। कोशिश कर और तरफ से बुद्धियोग हटाकर बाप को याद करना है। जितना याद करेंगे उतना ही पाप कटेंगे। ऐसे नहीं कि जितना हम याद करेंगे उतना बाबा भी याद करेंगे। बाप को कोई पाप थोड़े ही काटनी है। पतित–पावन है ही एक बाप। समझते हैं 40 हजार वर्ष पड़े हैं। तो याद करें ही क्यों? जब बाप आवेंगे डायरेक्शन देंगे तब बात। अभी तुम यहाँ बैठे हो पावन बनने लिये। शिवबाबा भी यहाँ हैं। लोन लिया हुआ है। अपना शरीर तो है नहीं। तुम्हारी बाप से ही प्रतिज्ञा है बाबा आप आवेंगे तो हम आपके बन नई दुनिया के मालिक बनेंगे। अपने दिल से पूछते रहो। यह तो जानते हैं। बुद्धि–योग की लिंक बाप से टूट जाती है। बाप जानते हैं लिंक टूटेगी, फिर याद करेंगे फिर टूटेगी। जितना जो बाप को याद करेंगे। याद करते2 पाप कट जावेंगे, फिर नम्बरवार तो पुरूषार्थ तो करते ही हैं। अच्छी रीति याद में रहे तो इस डिनायस्टी में आ जावेंगे। अपनी जाँच करते रहो। डायरी रखो। सारे दिन में हमारी बुद्धि योग कहाँ2 गई। तो फिर बाबा समझावेंगे। यह तो ठीक है। 5मिनट, 10मिनट याद में रहे। बाकी समय बुद्धि कहाँ2 रही वह भी देखो। तो बाबा बता देंगे। आत्मा में जो मन बुद्धि है वह भागती है। आत्मा नहीं भागती है। मन भागती है। तो बाप कहते हैं भागने से घाटा पड़ जावेगा। मुझे याद करने से बहुत फायदा है। बाकी तो नुकसान ही नुकसान है। याद करना है मुख्य एक को। अपने ऊपर बहुत खबरदारी रखनी है। हमको बाप को याद करना है। उनको तो 84 जन्म याद किया। घाटा ही पाया। दिन प्रति दिन घाटा पड़ती रहती है ना। एक–एक दिन हो 5000वर्ष हुआ तो घाटा हुआ ना। कदम2 पर फायदा कदम2 पर घाटा। कम हो जाता है। ऐसे विचार–सागर–मंथन कर ज्ञान रत्न निकालनी चाहिए। बाप की याद में एकाग्रचित हो लगना है। बाढ़े आदि का काम करते हैं तो बुद्धि उसमें लगी रहती है। तो ऐसी2 बातें अपन से करते रहो, नहीं तो माया ऐसी विचार लावेगी यहां क्या रखा है, जाकर धंधा आदि करें। कौड़िया कमाने की वासना आ जावेगी। ऐसे ख्याल माया लावेगी। धनवान को बहुत ऐसे विचार आते हैं। बाबा क्या करें।

बाबा का कितना अच्छा धंधा था। धक्के आदि खाने की दरकार नहीं। टेबल पर बैठे व्यापारी से हीरे छांटकर लेते थे। हावी थी। छांटकर दरवानों को देता था। इसको बेच कर आओ। उसमें रोशनी चाहिए। रात्रि को कोई हीरे की चीज़ नहीं लेंगे। शाम हुई और यह भागे। समझते थे शाम को कौन आवेगा मेरे पास। चाय पीने का टाइम होता था 5बजे शाम को। चाय पीया और भागा। मैच पर। क्रिकेट पर जावेंगे। हॉवी बहुत थी। यह कोई से हीरा लेना कोई बड़ी बात थोड़े ही है। व्यापारी आता था तो मैं पूछता पहले यह तो बताओ, व्यापारी हो या एजेंट हो?(हिस्ट्री) इसमें बुद्धि का योग बाप से रखना है। तुम सभी मेहनत करते हो। यह भी मेहनत करता है। बाप (का) ही परिचय देना है ना। दो बाप का वरसा है। अभी कलियुग पूरा हो सतयुग आता है। पतित तो सतयुग में जावेंगे ही नहीं। जितना याद करेंगे उतना ही पवित्र बनेंगे। प्योरिटी से धारणा अच्छी होगी। पतित न याद ..... न धारणा होगी। कोई को तकदीर अनुसार समय मिलता है पुरूषार्थ करते हैं, कोई को नहीं। याद ही क.... जिसने जितनी कोशिश कल्प पहले की है उतनी करते हैं। याद नम्बरवार तो है ना। हरेक को अपने मेहनत करनी है। कमाई में घाटा पड़ता था तो आगे कहते थे ईश्वर की इच्छा। अभी कहते हैं ड्रामा। जो कल्प पहले हुआ है वह होगा। ऐसे नहीं अभी 4घंटा याद करते हो तो दूसरे कल्प में जास्ती करेंगे, नहीं। शिक्षा दी जाती ..... अभी पुरूषार्थ करेंगे तो कल्प2 अच्छा पुरूषार्थ होगा। जितना बाबा की याद कम उतना ही मायामत है वा याद है तो श्रीमत है। तुम वास्तव में परवश हो। अभी ईश्वर बाप अपने वश करते हैं। यह खेल है जो बाप समझाते। अनेक वार पार्ट बजाया है। बाप को याद करो। जाँच करो। बुद्धि कहाँ जाती है माया कह.... लगती है। मलयुद्ध में बड़ी खबरदारी रखते हैं। अच्छा, रूहानी बाप–दादा का याद प्यार गुडनाइट।